Subject: Sanskrit; Honours Part-3

Paper: VII [छन्द]

Faculty: Arts

Notes by Dr. Shobha Pandey; Associate Professor;
Mahila College; Dalmianagar [VKSU]

"छन्द"

संस्कृत में रचना प्रायः दो तरह की होती है - गद्य और पद्य छन्द रहित रचना को गद्य कहते हैं और छन्दोबद्ध रचना को पद्य कहते हैं।

जो रचना अक्षर, मात्रा, गति, यति आदि के नियमों से युक्त होती है उसे छन्द कहते हैं।

जिन ग्रन्थों में छन्दों के स्वरूप तथा प्रकार आदि का विवेचन रहता है उन्हें छन्दशास्त्र कहते हैं।

वर्ण या अक्षर —

छन्दशास्त्र की दृष्टि से केवल व्यंजन (क ख आदि) अक्षर या वर्ण नहीं कहलाते। अकेला स्वर या व्यंजन-सहित स्वर "अक्षर" कहलाता है। "आ", "का" और "काम" में छन्दशास्त्र की दृष्टि से एक ही अक्षर है क्योंकि उनमें स्वर तो केवल 'आ' ही है। छन्द में अक्षर गिनते समय व्यंजनों की ओर ध्यान नहीं दिया जाता।

गुरु-लघु —

ह्रस्व अक्षरों (अ, इ, उ, ऋ, लृ) को छन्दशास्त्र में लघु कहते हैं और दीर्घ अक्षरों (आ, ई, ऊ, ॠ, ए, ऐ, ओ, औ) को गुरु।

इसी तरह क, कि आदि लघु अक्षर हैं और का, कौ आदि गुरु। छन्दशास्त्र में निम्नलिखित को गुरु माना जाता है। —

"सानुस्वारश्च दीर्घश्च विसर्गी च गुरुर्भवेत्।
वर्णः संयोगपूर्वश्च तथा पादान्तगोऽपि वा॥"

अर्थात् अनुस्वार युक्त दीर्घ, विसर्ग युक्त और संयुक्त पूर्व वर्ण गुरु होता है। छन्द के पाद या चरण का

अन्तिम वर्ण आवश्यकतानुसार लघु या गुरु मान लिया जाता है।
इस परिभाषा के अनुसार 'कंस में कं', 'काम में 'का' दुःख में दु और 'युक्त में 'यु' गुरु अक्षर है।
गुरु का चिह्न है "S" और लघु का चिह्न "।" है।

गण - छन्दशास्त्र के तीन-तीन अक्षरों के समूह को 'गण' कहा गया है। उन गणों के नाम तथा स्वरूप निम्नलिखित हैं —

1. मगण - म - तीनो अक्षर गुरु - SSS - मान्धाता, विद्यार्थी
2. नगण - न - तीनों अक्षर लघु - ||| - निगम, सरल।
3. भगण - भ - प्रथम अक्षर गुरु - S|| - भारत, कृत्रिम।
4. यगण - य - प्रथम अक्षर लघु - |SS - यशोदा, सुमित्रा।
5. जगण - ज - मध्य अक्षर गुरु - |S| - जिगषु, जवान
6. रगण - र - मध्य अक्षर लघु - S|S - राधिका, राक्षसी।
7. सगण - स - अन्तिम अक्षर गुरु - ||S - सविता, कमल।
8. तगण - त - अन्तिम अक्षर लघु - SS| - तारेश, आकाश।

"मस्त्रिगुरुस्त्रिलघुश्च नकारो भादिगुरुः पुनरादिलघुर्यः
जो गुरुमध्यगतो रलमध्यः सोऽन्तगुरुः कथितोऽन्तलघुस्तः

अर्थात मगण में तीनों गुरु, नगण में तीनों लघु, भगण में आदि अक्षर गुरु, यगण में आदि लघु जगण में मध्यम गुरु, सगण में अन्तिम गुरु, रगण में मध्यम गुरु और तगण में अन्तिम लघु होता है।

छन्द के प्रकार

छन्द तीन तरह के होते हैं।

1. वार्णिक छन्द (या वृत) - जिस छन्द के सभी चरणों में वर्णों की संख्या समान हो।
2. मात्रिक छन्द (या जाति) - जिस छन्द के सभी चरणों में मात्राओं की संख्या समान हो
3. मुक्त छंद - जिस छंद में वार्णिक या मात्रिक प्रतिबन्ध न हो।

कुछ प्रमुख छंद -

① अनुष्टुप छंद :-

लक्षण - श्लोके षष्ठं गुरु ज्ञेयं सर्वत्र लघुपञ्चमम्
द्विचतुः पादयोर्ह्रस्वं सप्तमं दीर्घमन्ययोः ॥

अनुष्टुप छन्द के प्रत्येक चरण में आठ-आठ वर्ण होते हैं। इनमें पाँचवा वर्ण सर्वदा लघु और छठवाँ वर्ण सदा गुरु होता है। सप्तम वर्ण प्रथम तथा तृतीय चरण में गुरु तथा द्वितीय और चतुर्थ चरण में लघु होता है अन्य अक्षरों में गुरु या लघु का कोई नियम नहीं होता

उदाहरण -

I S S I S I
तवास्मि गीतरागेण हारिणा प्रसभं हृतः
S S S I
एष राजेव दुष्यन्तः सारङ्गेणातिरंहसा ॥

प्रस्तुत उदाहरण में लक्षणानुसार पाँचवा वर्ण चारो चरणों में (त स न ति) ह्रस्व (लघु) है। छठवाँ वर्ण चारो चरणों में (रा, भं, दुष, रं) गुरु है। सातवां वर्ण प्रथम एवं तृतीय में गुरु तथा द्वितीय एवं चतुर्थ में लघु है।

② आर्या छंद —

यस्याः प्रथमपादे द्वादशमात्रास्तथा तृतीयेऽपि।
अष्टादश द्वितीये चतुर्थके पञ्चदश साऽऽर्या ॥

यह मात्रिक छन्द है। इसके प्रथम चरण में 12 मात्राएँ द्वितीय में 18 तृतीय में 12 तथा चतुर्थ में 15 मात्राएँ होती हैं।

उदाहरण -

I I I I S I S S S I I S S I I I I S I I S S
सुभगसलिलावगाहाः पाटलसंसर्गसुरभिवनवाताः
S S I I I I S I I S I I S I I I S S
प्रच्छायसुलभनिद्रा दिवसाः परिणामरमणीयाः

प्रस्तुत उदाहरण में प्रथम एवं तृतीय चरण में 12 मात्राएँ द्वितीय चरण में 18 तथा चतुर्थ चरण में 15 मात्राएँ हैं।

③ वंशस्थ छन्द :-

लक्षण - जतौ तु वंशस्थमुदीरितं जरौ ।

इस छन्द के प्रत्येक चरण में क्रमशः जगण, तगण और रगण के क्रम से 12 वर्ण होते हैं।

उदाहरण -

ISISS IISI SIS
विचिन्तयन्ती यमनन्यमानसा
ISIS SI SIS IS
तपोधनं वेत्सि न मामुपस्थितम् ।
ISIS SIIS I S IS
स्मरिष्यति त्वां न स बोधितोऽपि सन्
IS SS IS IS IS
कथां प्रमत्तः प्रथमं कृतामिव ॥

④ इन्द्रवज्रा :— इन्द्रवज्रा के प्रत्येक चरण में 11-11 वर्ण होते हैं

लक्षण - स्यादिन्द्रवज्रा यदि तौ जगौ गः

इसका अर्थ है कि इन्द्रवज्रा के प्रत्येक चरण में दो तगण एक जगण और दो गुरु के क्रम में वर्ण रखे जाते हैं। इसका स्वरूप इसतरह है -

SSI SSI ISI SS
तगण तगण जगण दो गुरु

उदाहरण - SS I SS IISI SS
अर्थो हि कन्या परकीय एव
SSI SSI ISI SS
तामद्य संप्रेष्य परिग्रहीतुः ।

⑤ उपेन्द्रवज्रा — इस छन्द के भी प्रत्येक चरण में 11-11 वर्ण होते हैं। लक्षण इस प्रकार है -

उपेन्द्रवज्रा जतजास्ततो गौ

अर्थात् उपेन्द्रवज्रा के प्रत्येक चरण में जगण-तगण, जगण और दो गुरु वर्णों के क्रम से वर्ण होते हैं। इसका स्वरूप इस तरह है ।

ISI SSI ISI SS
जगण तगण जगण दो गुरु

उदाहरण - ISI SS I IS ISS
त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव
त्वमेव सर्वम् मम देव देव ॥

ई अन्तिम 'व' लघु होते हुए भी गुरु माना गया है। क्योंकि विराम है यही नियम है।

(6) उपजाति — जिस छन्द में कोई चरण इन्द्रवज्रा का हो और कोई उपेन्द्रवज्रा का हो अर्थात् इन्द्रवज्रा और उपेन्द्रवज्रा इन दो छन्दों के लक्षणों से युक्त हो उसे उपजाति छन्द कहते हैं। इसका लक्षण इस तरह है —

अनन्तरोदीरित लक्ष्म भाजौ
पादौ यदीयावुपजातयस्ताः
इत्थं किलान्यास्वपि मिश्रितासु
वदन्ति जातिष्वदमेव नाम ॥

अर्थात् इन्द्रवज्रा और उपेन्द्रवज्रा या अन्य तरह के छन्द मिलकर जब एक रूप ग्रहण कर लेते हैं उसे उपजाति छन्द कहते हैं।

उदाहरण

I S I S S S I S I S S
पुरस्कृता वर्त्मनि पार्थिवेन (उपेन्द्रवज्रा)

S S I S I I I S I S S
प्रत्युद्गता पार्थिवधर्मपत्न्या ॥ (इन्द्रवज्रा)

(7) वसन्ततिलका :—

लक्षण - उक्ता वसन्ततिलका तभजाः जगौ गः

यह चौदह वर्णों का छन्द है अर्थात् वसन्ततिलका छन्द के प्रत्येक चरण में 14-14 (चौदह) वर्ण होते हैं। तगण, भगण, जगण, और दो गुरुओं के क्रम से इसका प्रत्येक चरण बनता है

उदाहरण — S S I S I I I S I I S I S S
हे हेमकार परदुःख विचार मूढ
किं मां मुहुः क्षिपसि वार शतानि वह्नौ
संदीप्यते मयि तु सुप्रगुणातिरेको-
लाभः परं तव मुखे खलु भस्मपातः ॥

⑧ शिखरिणी -

लक्षण - रसै: रुद्रैश्छिन्ना यमनसभला ग: शिखरिणी
शिखरिणी छन्द के प्रत्येक पाद में 17-17 वर्ण होते हैं। पहले (रस) 6 फिर (रुद्र) 11 वर्णों पर यति होती है। वर्णों का क्रम यगण, मगण, नगण, सगण, भगण तथा अन्त में एक लघु (।) और गुरु (S) होता है।
यगण - ।SS मगण - SSS नगण ।।। सगण ।।S भगण S।। लघु - । तथा गुरु S।

उदाहरण - ।SSS SS ।। ।।S S।। ।S
चलापाङ्गां दृष्टिं स्पृशसि बहुशो वेपथुमतीं
रहस्याख्यायीव, स्वनसि मृदु कर्णान्तिकचरः
करौ व्याधुन्वत्याः पिबसि रतिसर्वस्वमधरं
वयं तत्त्वान्वेषान् मधुकर हतास्त्वं खलु कृती

उपर्युक्त श्लोक के प्रत्येक चरण में 17-17 वर्ण हैं तथा वर्णों का क्रम भी यगण, मगण, नगण, सगण भगण तथा अन्त में एक लघु और एक गुरु के अनुसार है। इसके साथ ही साथ इस श्लोक को पढ़ने में हर पंक्ति में छठे और सत्रहवें (6, 17) पर साँस लेने के लिए विराम लेना पड़ता है जो इसके लक्षण में सन्निहित (रसै: रुद्रै: छिन्ना) है।

⑨ मन्दाक्रान्ता :- मन्दाक्रान्ताऽम्बुधिर-सनगैर्मो भनौ तौ ग युग्मम्।
मन्दाक्रान्ता छन्द के प्रत्येक चरण में सत्रह (17) अक्षर होते हैं इनके प्रत्येक चरण में तीन स्थानों पर यति (विराम) होती है और चार (जलधि = समुद्र चार होते हैं छ: (षड्गै:) तथा सात (अन्तिम वर्ण पर। इसके प्रत्येक चरण में वर्णों का विन्यास मगण (SSS) भगण (S।।) नगण (।।।) तगण (SS।)

तगण (SSI) तथा अन्त में दो गुरु के क्रम से होता है।

SSS IIIIIS SISSISS

उदाहरण - कश्चित् कान्ता विरह गुरुणा स्वाधिकारप्रमत्तः

SSS SIIII IIS SISSISS

शापेनस्तङ्गमितमहिमा वर्षभोग्येण भर्तुः

यक्षाश्चक्रे जनकतनयास्नान पुण्योदकेषु

स्निग्ध छायातरुषु वसतिं रामगिर्याश्रमेषु ॥

उपर्युक्त श्लोक में मात्रांकन करने पर हम देखते हैं कि इसके प्रत्येक चरण में वर्णों का विन्यास मगण (SSS) भगण (SII) नगण (III) तगण (SSI) तगण (SSI) तथा अन्त दो गुरु के क्रम से है। तथा श्लोक पाठ करने में क्रमशः चौथे (4) दसवें और सत्रहवें वर्ण पर अल्प विराम लेना पड़ता है जो मन्दाक्रान्ता छन्द के लक्षण के अनुसार है।

⑩ द्रुतविलम्बित :— इस छन्द के प्रत्येक चरण में 12-12 वर्ण होते हैं जिसका लक्षण और स्वरूप निम्नलिखित है :—

द्रुतविलम्बितमाह नभौ भरौ

द्रुतविलम्बित छन्द के प्रत्येक चरण में नगण (III) भगण (SII) भगण (SII) रगण के क्रम से 12 वर्ण होते हैं।

III SIIS IISIS

उदाहरण - विपदि धैर्यमथाभ्युदये क्षमा

सदसि वाक्पटुता युधि विक्रमः

यशसि चाभिरुचिर्व्यसनं श्रुतौ

प्रकृतिसिद्धमिदं हि महात्मनाम ॥

⑪ मालिनी — मालिनी 15 वर्णों का छन्द है। जिसका लक्षण इस तरह है। न-न मयययुतेयं मालिनी भोगिलोकैः। मालिनी छन्द के प्रत्येक चरण में 15 वर्ण होते हैं वर्ण विन्यास नगण (III) नगण (III) मगण (SSS) यगण (ISS) यगण (ISS) के क्रमानुसार

होता है। इसके प्रत्येक चरण में क्रमशः आठ और सात अक्षरों पर विराम होता है।

उदाहरण — ।।।।।।।SS S।SS।SS
सरसिजमनुविद्धं शैवलेनापि रम्यं
।।।।।।SSS। SS ।SS
मलिनमपि हिमांशोर्लक्ष्म लक्ष्मीं तनोति
।।।।।।SS S।SS। SS
इयमधिकमनोज्ञा वल्कलेनापि तन्वी
।।।।।।।। S।SS।SS
किमिव हि मधुराणां मण्डनमाकृतीनाम् –

उपर्युक्त श्लोक में मात्रांकन करने पर हम इसे मालिनी छन्द के लक्षणों से युक्त पाते हैं। इसके प्रत्येक चरण में 15 वर्ण हैं तथा दो नगण (।।।,।।।) एक मगण (SSS) तथा दो यगण (।SS,।SS) के अनुसार वर्ण विन्यास हुआ है। ~~प्रत्येक~~ श्लोक पाठ के क्रम में आठवें और पन्द्रहवें वर्ण पर विराम स्पष्ट हो रहा है

⑫ भुजङ्गप्रयात :— भुजङ्गप्रयातं चतुर्भिर्यकारैः

इस छन्द में चार यगणों (।SS,।SS,।SS,।SS) के क्रम से ~~~~ प्रत्येक चरण बनता है। भुजङ्गप्रयात छन्द के प्रत्येक चरण में 12-12 वर्ण होते हैं।

उदाहरण — ।S S।SS ।SS ।SS
प्रभो! देशरक्षा बलं मे प्रयच्छ
नमस्तेऽस्तु देवेश! बुद्धिं च यच्छ
सुतास्ते वयं शूरवीरा भवाम
गुरुन् मातरं चापि तातं नमाम ॥

⑬ शार्दूलविक्रीडित :—

लक्षण - ~~सूर्याश्वैर्यदि मः~~ सजौ सततगाः शार्दूलविक्रीडितम्

शार्दूलविक्रीडित छन्द के प्रत्येक चरण में 19 वर्ण होते हैं। प्रत्येक चरण में 12 (सूर्य की कलाएँ) और अश्व सात (सूर्य के घोड़े) पर यति होती है। जहाँ वर्ण मगण (SSS) सगण (।।S) जगण (।S।) सगण (।।S)

दो तगण (SSI, SSI) तथा अन्त में एक गुरु (S) के क्रम से रखे जाते हैं वह शार्दूलविक्रीडित छन्द होता है। SS S II S IS I IIS SS IS SIS
जैसे - रे रे चातक! सावधान-मनसा मित्र क्षणं श्रूयताम्
अम्भोदा बहवो वसन्ति गगने सर्वे तु नैतादृशाः
केचिद् वृष्टिभिरार्द्रयन्ति वसुधा गर्जन्ति केचिद् वृथा
यं यं पश्यसि तस्य तस्य पुरतो मा ब्रूहि दीनं वचः॥
उपर्युक्त यह श्लोक शार्दूलविक्रिडित छन्द के लक्षणों से युक्त है। इसके प्रत्येक चरण में 19 वर्ण हैं। श्लोक का पाठ करने पर 12 और सात वर्णों पर विराम है।

(14) स्रग्धरा :- स्रग्धरा वर्ण संख्या की दृष्टि से भागवत का सबसे बड़ा छन्द है जिसके प्रत्येक चरण में 21 वर्ण होते हैं। चारों चरण समान होते हैं प्रत्येक चरण में गण क्रम म र भ न य य य होता है। सूत्र - म्रभ्नैर्यानां त्रयेण त्रिमुनियतियुता स्रग्धरा कीर्तितेयम्
स्रग्धरा छन्द के प्रत्येक चरण में 21 वर्ण होते हैं। वर्णों का विन्यास मगण (SSS), रगण (SIS), भगण (SII), नगण (III), यगण (ISS), यगण (ISS), यगण (ISS) क्रमानुसार होता है। इसमें तीन बार सात अक्षरों के बाद यति होती है। (त्रिमुनि यतियुता)

उदाहरण - S S SS I SS IIIIIIS S IS SISS
ग्रीवाभंगाभिरामं मुहुरनुपतति स्यन्दने दत्त दृष्टिः
पश्चार्धेन प्रविष्टः शरपतनभयात् भूयसा पूर्वकायम्
दर्भैरर्धावलीढैः श्रमविवृतमुखभ्रंशिभिः कीर्णवर्त्मा
पश्योदग्रप्लुतत्वात् वियति बहुतरं स्तोकमुर्व्यां प्रयाति॥
उपर्युक्त श्लोक में मात्रांकन करने पर हम देखते हैं कि इसके प्रत्येक चरण में 21 वर्ण हैं। श्लोक पढ़ने के क्रम में सात-सात अक्षरों पर विराम है। वर्णों का क्रम मगण (SSS) रगण (SIS) भगण (SII) नगण (III) तथा तीन यगण (ISS, ISS, ISS) के अनुसार है जो स्रग्धरा छन्द के लक्षण के समान है।

— x —